पाठ 2. नेकी बनी बदी

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को ईमानदारी एवं कर्तव्यनिष्ठा की सीख देना है। इस पाठ द्वारा बच्चे समझ पाएँगे कि किसी की चापलूसी करके व्यक्ति सफलता के कुछ कदम भले ही चल पाए परंतु जीवन भर वह इस सफलता को बनाए नहीं रख सकता।

पाठ का सारांश

जिस कार्यालय में लेखक कर्मचारी थे वहीं पर 'गरीब' नाम का एक चपरासी काम करता था। वह बहुत नेक और आज्ञाकारी था। सब उसके भोलेपन का लाभ उठाते। गरीब के घर में खेती-बाड़ी तथा मनों दूध होने की बात से सभी लोग उससे चिढ़ते थे। कार्यालय के सभी लोग चाहते थे कि गरीब उनलोगों के लिए भी अपने घर से खाने-पीने की चीज़ें लाया करे। लेखक के कहने पर गरीब एक दिन कार्यालय में मटर की फलियाँ, गन्ने का रस तथा गन्ने लेकर आया। बड़े बाबू भेंट मिलने से खुश हुए। अब हर दसवें-पाँचवें दिन यह कार्यक्रम चलने लगा। गरीब अब सबका चहेता बन चुका था। पर अब वह कामचोर भी हो गया था। कोई उसे कुछ नहीं कहता था। एक दिन गरीब ने ठेलेवालों से रिश्वत ली तो लेखक को यह सब देखकर अत्यंत खेद हुआ। शायद लेखक ने ही उसे तरक्की पाने का यह रास्ता दिखलाया था।

अध्यापन संकेत

पाठ का आदर्श वाचन करें तथा पाठ को अंशों में बाँटकर बच्चों से मुखर वाचन करवाएँ। पाठ के महत्त्वपूर्ण बिंदुओं तथा गद्यांशों का भाव स्पष्ट करें। बच्चों को मुंशी प्रेमचंद का संक्षिप्त परिचय दें।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें–

- बच्चों से पूछें कि उन्हें 'गरीब' का चरित्र कैसा लगा? उसके स्वभाव में आए बदलाव के बारे में उनकी राय जानें।
- बच्चों को यह समझाएँ कि सफलता पाने के लिए अपना कर्म ईमानदारी के साथ करना ज़रूरी है। सफल होने का गलत रास्ता इनसान को पतन के रास्ते ले जाता है।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।